अनुसंधान को लोगों तक पहुँचाने के लिए वानिकी विस्तार

साधारण क्रियान्वयन योग्य तकनीकों को लक्षित वर्गों, खासकर, राज्य वन विभागों और किसानों तक पहुंचाने के लिए परिषद् प्रयासरत है। परिषद् द्वारा वानिकी विस्तार कार्यक्रमों के विकास तथा प्रसार का कार्य किया जाता है। परिषद् द्वारा भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों तथा केंद्रों के विभिन्न विस्तार क्रियाकलापों का समन्वयन भी किया जाता है। परिषद् द्वारा वानिकी, पर्यावरण और सम्बद्ध विज्ञानों के साथ–साथ पर्यावरण समाघात आकलन, पर्यावरण प्रबंधन योजना तथा अन्य सम्बद्ध क्षेत्रों में परामर्शी तकनीकी सेवाएं मुहैया कराई जाती हैं। परिषद्, विभिन्न योजनाओं जैसे वन विज्ञान केंद्रों, प्रदर्शन ग्रामों, वन विज्ञान केंद्रों का कृषि विज्ञान केंद्रों के साथ नेटवर्किंग द्वारा विभिन्न विस्तार क्रियाकलापों में भाग लेकर तथा स्तरीय प्रकाशनों के जरिए अनुसंधान निष्कर्षों को हितधारकों में प्रसारित करने के लिए वचनबद्ध है।

7

7.1 वानिकी रिपोर्टों/जरनलों का संग्रह, संकलन तथा प्रकाशन

7.1.1 अनुसंधान प्रकाशन

परिषद् की विस्तार गतिविधियों में प्रकाशन एक मुख्य अंग है। प्रत्येक वर्ष पुस्तकें, पुस्तिकायें, ब्रॉशर्स, पैम्पलेट्स, अनुसंधान प्रलेख तथा आवधिक पत्रिकायें प्रकाशित की जाती हैं। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान प्रकाशनों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

- भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट 2014–15
- भा.वा.अ.शि.प. का छमाही न्यूजलैटर तथा वानिकी समाचार
- गंगा में वानिकी अनुप्रयोग के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट , खंड I – II
- वानिकी में उपयोगी जीवाणु तथा माइकोराइजा पर हुई प्रगति पर पुस्तक भा.वा.अ.शि.प. स्टेट ऑफ नॉलेज सीरिज– II
- भारत के वानिकी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरण तथा अनुकुलन पर एक पुस्तक
- भारत में बांस पर पुस्तक
- अकाष्ठीय वन उत्पादों की पारितंत्रीय निरंतरता : गतिकी एवं फसलीकरण का कार्य अध्ययन, पर पुस्तक
- गढ़वाल, उत्तराखंड, पश्चिमी हिमालय, भारत में तितलियों पर मोनोग्राफ
- वन आनुवंशीय संसाधन प्रबंधन पर पुस्तक
- वृक्ष बीज विज्ञान एवं वन संवर्धन के नये आयामों पर पुस्तक
- शोला वृक्षों की सचित्र मार्गदर्शिका
- लाल सैन्डर्स के रक्षण तथा सतत उपयोजन पर संरक्षण, उपयोजन, अनुसंधान एवं शिक्षा उपायों पर ड्राफ्ट रिपोर्ट
- खाद्य बांस कोंपलों की खेती की संभावनाओं पर पुस्तिका
- वनिकी सांख्यिकी : पद्धतियां तथा अनुप्रयोग

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिक जरनलों और पुस्तकों में वर्ष के दौरान कुल 412 अनुसंधान लेख प्रकाशित किये गये जिनका विवरण इस प्रकार है :

क्र.सं.	संस्थान का नाम	वैज्ञानिकों जरनलों तथा पुस्तकों/कार्यवाहियों में प्रकाशित अनुसंधान लेखों की संख्या		
		राष्ट्रीय जरनल	विदेशी जरनल	पुस्तकों/कार्यवाहियों के अध्याय
1	भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	1	4	4
2	व.अ.सं., देहरादून	69	56	19
3	व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर	24	22	25
4	का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू	13	21	18
5	उ.व.अ.सं, जबलपुर	12	7	15
6	शु.व.अ.सं, जोधपुर	21	8	12
7	व.व.अ.सं., जोरहाट	16	8	7
8	हि.व.अ.सं. ,शिमला	14	6	2
9	व.उ.सं., रांची	4	0	0
10	व.जै.सं., हैदराबाद	1	3	
	कुल	**174**	**133**	**105**

भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों द्वारा संगोष्ठियों/सम्मेलनों/कार्यशालाओं में कुल 32 अनुसंधान लेख प्रस्तुत किये गये साथ ही 55 सारांश और 33 लोकप्रिय लेख प्रकाशित किये गये जिनका विवरण इस प्रकार है :

क्र.सं.	संस्थान का नाम	संगोष्ठियों/सम्मेलनों/कार्यशालाओं में प्रस्तुत लेखों की संख्या तथा प्रकाशित सारांश और लोकप्रिय लेख		
		प्रस्तुत किए गए लेख	प्रकाशित सारांश	लोकप्रिय लेख
1.	व.अ.सं., देहरादून	0	18	3
2.	व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर	0	2	1
3.	का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू	26	0	2
4.	उ.व.अ.सं, जबलपुर	0	18	7
5.	शु.व.अ.सं, जोधपुर	0	14	19
6.	हि.व.अ.सं. ,शिमला	6	3	1
	कुल	**32**	**55**	**33**

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा वर्ष के दौरान कुल 8 पुस्तकों और 23 पुस्तिकाओं/ब्रॉशर्स/पैम्फ्लेट्स का प्रकाशन किया गया जिनका विवरण इस प्रकार है :

क्र.सं.	संस्थान का नाम	प्रकाशित पुस्तकों और पुस्तिकाओं, ब्रॉशर्स/पैम्फ्लेट्स की संख्या	
		पुस्तकें	पुस्तिकाऐं/ब्रॉशर्स/बुलेटिन/पेम्फ्लेट्स
1	भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	1	0
2	व.अ.सं., देहरादून	3	2
3	व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर	3	11
4	का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू	0	1
5	उ.व.अ.सं, जबलपुर	1	7
6	हि.व.अ.सं. ,शिमला	0	2
	कुल	**8**	**23**

7.1.2 राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र (रा.व.पु.सू.के)

- राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र वानिकी तथा संबंधित विज्ञानों के प्रलेख संग्रह में दक्षिण तथा दक्षिण पूर्वी एशिया का समृद्धतम केंद्र है। वर्ष के दौरान, उपभोक्ताओं तथा बाह्य पाठकों को 25,215 पुस्तकें लोन पर दी गईं। इसके साथ–साथ 52,590 प्रलेखों का पुस्तकालय में परामर्श किया गया।
- वर्ष के दौरान रा.व.पु.सू.के. में 656 पुस्तकें तथा अन्य प्रलेख शामिल किये गये। रा.व.पु.सू.के. द्वारा वर्ष में 26 भारतीय आवधिक शीर्ष तथा एक अन्तर्राष्ट्रीय जरनल के लिए अंशदान दिया गया। इसे आवधिकों के 491 अंक निशुल्क प्राप्त हुये।
- वर्ष के दौरान, राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों आदि को 241 पुस्तकों का विक्रय किया गया।

7.1.3 पर्यावरणीय सूचना पद्धति (एन्विस)

7.1.3.1 वानिकी पर एन्विस केंद्र, व.अ.सं., देहरादून

- इसकी स्थापना लगभग 20 वर्ष पहले की गई थी। वानिकी पर एन्विस केंद्र द्वारा भारत में बांस, पर्यावरण एवं वन न्यूज डाईजेस्ट तथा भारत में पॉपलर पुस्तकें प्रकाशित की गई।

7.1.3.2 वन आनुवंशिकी संसाधन तथा वृक्ष सुधार पर एन्विस केंद्र, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

- हितधारकों में जागरूकता पैदा करने के लिए निम्नलिखित अवसरों पर एन्विस केंद्र वन आनुवंशिकी संसाधनों एवं वृक्ष सुधार, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा पोस्टर अवमुक्त किये।
- जीवविज्ञानीय वैविध्य पर अन्तर्राष्ट्रीय दिवस 22 मई 2015
- ओजोन परत के रक्षण अन्तर्राष्ट्रीय दिवस 16 सितम्बर 2015
- अन्तर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस 11 दिसम्बर 2015
- वन अन्तर्राष्ट्रीय दिवस 21 मार्च 2016
- ओल्वाकोड, केरल में पालक्क्ड़ रेलवे स्टेशन पर साईन्स एक्सप्रेस क्लाईमेट एक्शन स्पेशल की दो दिवसीय प्रदर्शनी के दौरान 22 एवं 23 मार्च 2016 को एन्विस के सामान्य क्रिया कलापों को रेखांकित करते हुये सूचना बोर्ड प्रदर्शित किये गये और वन आनुवंशिकी संसाधनों एवं वृक्ष–सुधार के महत्व को प्रदर्शित किया गया।

विज्ञान एक्प्रेस जलवायु एक्शन स्पेशल पर प्रदर्शनी

7.2 विकसित प्रदर्शनियों का प्रसार

7.2.1 वन विज्ञान केंद्र (व.वि.के.) तथा प्रदर्शन ग्राम (प्र.ग्रा.)

7.2.1.1 वन विज्ञान केंद्र (व.वि.के.)

वर्ष 2007–08 में प्रारंभ की गई योजना वन विज्ञान केंद्र के अंतर्गत परिषद्, इसके संस्थानों तथा राज्य वन विभागों द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों को उपभोक्ता वर्गों जिनमें किसान तथा वन आधारित उद्योग शामिल हैं में प्रसारित किया गया। क्षमता वृद्धि तथा अन्य क्रिया कलापों का सारांश इस प्रकार है :

क्र.सं.	संस्थान का नाम	प्रशिक्षणों की संख्या	दिन और स्थान	अन्य क्रियाकलाप
1.	उ.व.अ.सं, जबलपुर	4	कोरापुट, उड़ीसा में 5 दिन	–
2.	व.व.अ.सं., जोरहाट	4	अरूणाचल प्रदेश में 5 दिन	–
		1	मिजोरम में 5 दिन	
		1	नागालैंड में 2 दिन	–
		1	त्रिपुरा में 3 दिन	–
3.	हि.व.अ.सं., शिमला	–	–	साहित्य मुहैया कराया
4.	व.उ.सं., रांची	–	–	दो वी.वी.के. के लिए सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये

व.वि.के. के अंतर्गत तुली, नगालैंड में प्रशिक्षण

7.2.1.2 प्रदर्शन ग्राम (प्र.ग्रा.)

परिषद् तथा इसके संस्थानों द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों का किसानों सहित उपभोक्ता वर्ग में प्रदर्शन द्वारा प्रसार एक विस्तार कार्यक्रम प्रदर्शन ग्राम द्वारा किया गया जो कि वर्ष 2007–08 से कार्य कर रहे हैं। क्षमतावृद्धि तथा अन्य क्रिया कलापों का सारांश इस प्रकार है :

क्र.स.	संस्थान का नाम	प्रदर्शनों / प्रशिक्षणों की संख्या	अन्य विस्तार कार्यक्रम
1.	उ.व.अ.सं, जबलपुर	2	जीवविज्ञानीय विविधता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दिवस मनाया गया।
2.	व.व.अ.सं., जोरहाट	1	प्रशिक्षण कार्यशाला मेलंग ग्रान्ट में रोपण कार्यक्रम
3.	हि.व.अ.सं. ,शिमला	–	अनुरक्षण कार्य

उ.व.अ.स. जबलपुर में प्रदर्शन ग्राम के अन्तर्गत प्रशिक्षण

मणिपुर में प्रदर्शन ग्राम के अन्तर्गत प्रशिक्षण

7.2.2. उपभोक्ताओं से सीधा सम्पर्क योजना (डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर स्कीम)

भा.वा.अ.शि.प. की अनुसंधान सफलताओं और तकनीकों के उत्तम विस्तार की रणनीति के रूप में उपभोक्ताओं तक सीधा सम्पर्क योजना जुलाई 2011 में आरंभ की गई जिसके तहत बिना देरी किये उपभोक्ताओं तक सीधी पहुंच बनाई जाती है। इस योजना के तहत निम्नलिखित क्रियाकलाप किये गये :

डी टी सी के अन्तर्गत व.व.अ.स., जोरहाट में बाँस हस्तशिल्प प्रशिक्षण

क्र.स.	संस्थान का नाम	क्रिया कलाप
1.	व.अ.सं., देहरादून	बांस प्रक्रमण केंद्र स्थापित किया गया और वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर व्याखयान आयोजित किए गए।
2.	व.व.अ.सं., जोरहाट	बांस हस्तशिल्प पर तीन प्रशिक्षण–सह–कार्यशालाएं आयोजित की गईं जिनकी अवधि 38 दिन थी, जिसमें असम, अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर और मेघालय के विभिन्न भागों से 70 भागीदार शामिल हुये।

7.2.3 हस्तांतरित प्रौद्योगिकियां

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने निम्नलिखित प्रौद्योगिकियां प्रसारित की :

- भारतीय कागज एवं लगदी उद्योग एवं अनुसंधान संगठनों को विभिन्न तकनीकी सेवायें दी।
- मूल्यवृद्धि हेतु मशरूप उत्पादों (अचार, सूप तथा बड़ी) पर बागबान ग्रामोद्योग समिति, देहरादून के सहयोग से 25 अप्रैल 2015 को एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया जिसमें श्यामपुर, व.अ.सं. का अंगीकृत गांव, देहरादून के 32 लोग शामिल थे।
- व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर ने निम्नलिखित तकनीकों का प्रसार किया:
- *कैज्यूरिना* (0.1 लाख पादप), *यूकेलिप्टस* (0.5 लाख पादप) तथा सागौन (0.1 लाख पादप) के उच्च उत्पादक कृन्तकों का वृहत वानस्पतिक बहुगुणन किया गया और किसानों को उचित मूल्य पर मुहैया कराया।
- सूक्ष्म प्रसार के जरिये सागौन के सुधारित पादप स्टॉक का वृहत बहुगुणन किया गया। व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर के अनुसंधान स्टेशनों नामतः पनाम्पली, चेन्नई, नेवली और तिरूनेल्वली में सागौन के चार प्रदर्शन परीक्षण स्थापित किये गए। किसानों को रोपण सामग्री मुहैया कराई गई है।
- श्री अशोक लवासा, भा.प्र.से., सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा 15 जून 2015 को मीली बग, *पी. मार्जीनेटस* के नियंत्रण के लिए 'क्रॉल क्लीन' (हरित कीटनाशक) अवमुक्त किया गया।

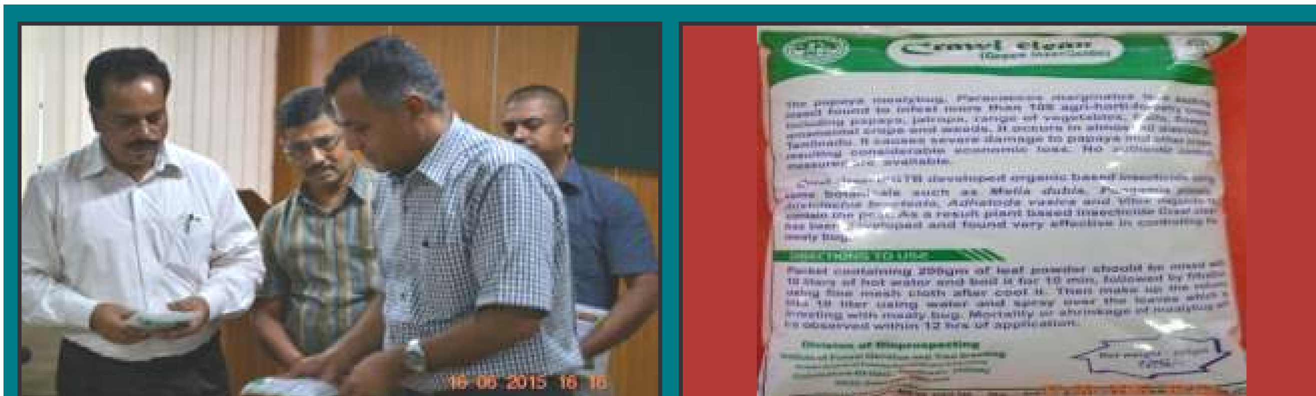

श्री अशोक लवासा, भा. प्र.से., सचिव, प.व.ज.प.मं., 'क्रॉल क्लीन' जैव कीटनाशक अवमुकत किया गया

- श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार द्वारा 2 फरवरी 2016 को नये उत्पाद–वर्मी को आई.पी.एम. ग्रोथ इनरिचर (इन्सटेन्ड पॉटिंग मीडियम) अवमुक्त किया गया।
- वा.अ.मि.सं.वि.कें., छिन्दवाड़ा, उ.व.अ.सं. का एक केंद्र, द्वारा महुआ के फूलों की एकत्रण पद्धति, *बुकनानिया लेंजन* (चिरौंजी) के पौधों को उगाने के लिए कम लागत की तकनीक, जिवामुक्त (जैव उर्वरक) की तैयारी तथा पादप आधारित जैवकीटनाशक पर सूचना का प्रसार किया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट ने निम्नलिखित तकनीकें प्रसारित की :

- झाड़ूघास आधारित कृषि वानिकी मॉडल : सी.एफ.एल.ई. द्वारा मार्स सामाजिक कल्याण समिति के जरिये कंचनपुर, त्रिपुरा के झूमियाओं (झूम खेती करने वालों) को झूम के बाद खाली पड़े खेतों में *कजानस कजान* तथा *अनानास कोसोमस* को

श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) व.व.ज.प.मं. द्वारा वर्मिको–आई पी एम एनरिचर अवमुक्त किया गया

फसल के मध्य में लगाते हुए झाडूघास की खेती करने हेतु अनुशंसित किया गया।

- बांस प्रवर्धन तकनीकें : त्रिपुरा के चालीस किसानों को अपने घरों के आस पास बांस पौधशालायें उगाने हेतु प्रेरित किया गया।
- स्थानीय समुदायों को तकनीकें : मार्स सोशियो वेल्फेयर सोसाइटी के जरिये कंचनपुर के स्थानीय समुदायों के लिए बांस उपचार केंद्र में बांस पर एक तकनीकी प्रदर्शन सत्र आयोजित किया गया।
- कम लागत की वर्मी कम्पोस्ट तकनीकें : उपचारित बांस के जरिये वर्मी कम्पोस्टिंग एकक आरंभ किये गये। पश्चिमी त्रिपुरा और उत्तरी त्रिपुरा में लाभार्थियों द्वारा उत्पादित वर्मी कम्पोस्ट को विक्रय के जरिए जीविकोपार्जन से जोड़ते हुये बाजार से सम्पर्क विकसित किए गए।

व.आ.वि.के., अगरतला द्वारा कम लागत की वर्मीकम्पोस्टिंग तकनीकों का प्रसार

7.3 वानिकी अनुसंधान में व्यापक विस्तार रणनीतियों का विकास तथा संयोजन

7.3.1 आयोजित किये गये सेमीनार/सिम्पोजिया/कार्यशालायें:

- राष्ट्रीय बांस डाटाबेस वेब पोर्टल/सॉफ्टवेयर उपयोजन पर प्रशिक्षण कार्यशाला,
- गंगा पर वानिकी प्रयोज्यता हेतु परामर्शी बैठकें तथा कार्यशाला,
- डाईकॉट (द्विबीजी) पादपों की चुनौती पर जातीय डी.एन.ए. निष्कर्षण,
- राष्ट्रीय वन नीति की समीक्षा एवं संशोधन,
- बांस रिजर्व प्रबंधन तथा उपयोजन विकल्पों में प्रगति (एडवांसेस),
- पादप जैवविविधता तथा पादप प्रचुरता का सतत् हरित पृथ्वी के लिए उपयोग,
- कृषि वानिकी तथा उसका प्रबंधन,
- बांस कार्य मैनुअल,
- आर ई डी डी+ हिमालय : हिमालय में आर ई डी डी+ के क्रियान्वयन हेतु अनुभव का विकास तथा उपयोग,
- राष्ट्रीय डाटाबेस वेब पोर्टल,
- बांस प्रवर्धन, पौधशाला प्रबंधन, वाणिज्यिक खेती तथा मूल्य वृद्धि,
- बांस आधारित आजीविका सृजन और अन्य वृक्ष प्रजातियां,
- फ्लेमेंजिया आधारित लाख की खेती,
- पादप ऊतक संवृद्धि प्रयोगशाला के अभिकल्प हेतु अनिवार्य आवश्यकतायें तथा ऊतक संवर्ध उत्पादन सुविधा के मानक प्रचालन की प्रक्रिया,
- 10 अत्यधिक सामान्य बीमारियों के उपचार हेतु औषधीय पादप संघटकों का प्रलेखीकरण,
- झूम फसलों में बीज श्रेणीकरण तथा उत्पादकता वृद्धि हेतु फार्म में परीक्षण,
- जड़ीय बगीचों का प्रबंधन तथा परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों का प्रलेखीकरण ,
- वन आधारित जीविको पार्जन विकल्पों की तकनीक को कार्यक्षेत्रीय प्रदर्शन के जरिये विस्तारित करना,
- अतीश (*एकोनीटम हेटेरोफाइलम*) तथा बनककड़ी (*पोडोफाईलम हेक्साड्रम*) की खेती,
- प्राकृतिक जल–संसाधनों के चारों ओर रोपण क्रिया कलाप,
- कृषि वानिकी बनाम उत्पादकता जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरण तथा अनुकूलन।

भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों/मुख्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न सेमीनारों/सिम्पोजिया/ कार्यशालाओं का सारांश इस प्रकार है :

क्र.सं	संस्थान/मुख्यालय	आयोजित सेमीनारों/सिम्पोजिया/कार्यशालाओं/बैठकों की संख्या	दिन
1.	भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	10	15
2.	व.अ.सं., देहरादून	8	15
3.	व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर	1	1
4.	का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू	3	7
5.	उ.व.अ.सं, जबलपुर	2	6
6.	व.व.अ.सं., जोरहाट	10	21
7.	हि.व.अ.सं.,शिमला	2	2
8.	व.जै.सं., हैदराबाद	1	1

7.3.3 विशेष क्रियाकलाप (जैसे वन महोत्सव, वानिकी दिवस तथा अन्य अवसर)

45वाँ पृथ्वी दिवस

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा 22 अप्रैल 2015 को पश्चिमी हिमालय शीतोष्ण आर्बोरेटम, पॉटर हिल, शिमला में 45वें पृथ्वी दिवस का आयोजन किया गया। 100 से अधिक विद्यार्थियों तथा स्थानीय लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। पहाड़ी बांस उत्पाद पर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

- वन अनुसंधान संस्थान ने 11 मई 2015 को राष्ट्रीय औद्योगिकी दिवस का आयोजन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस (आई बी डी)

- उ.व.अ.सं, जबलपुर के अधीनस्थ सी.एफ.आर.एच.आर.डी., छिंदवाड़ा, शु.व.अ.सं., जोधपुर तथा हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस 22 मई 2015 को मनाया गया। इस अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित किये गये जैसे पब्लिक रैली के जरिये ग्रामीणों/जनता को जागरूक करने हेतु कार्यक्रम, त्वरित भाषण, नारे/क्विज प्रतियोगिता, विज्ञान प्रदर्शनी आदि।

अ.जै.दि. के अवसर पर श्रोताओं से बातचीत करते श्री एन.के. वासु, निदेशक, शु.व.अ.से.

हि.व.अ.सं. शिमला में अ.जै.दि. समारोह

शु.व.अ.सं., जोधपुर में अं.जै.दि. समारोह

विश्व पर्यावरण दिवस

- व.अ.सं., देहरादून ने व.अ.सं. दिवस के साथ दिनांक 5 जून 2015 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। उ.व.अ.सं के अधीनस्थ सी.एफ.एच.आर.डी., छिन्दवाड़ा; शु.व.अ.सं., जोधपुर; व.व.अ.सं., जोरहाट तथा हि.व.अ.सं., शिमला ने भी विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। इस अवसर पर महिलाओं सहित ग्रामीणों और बच्चों के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये जैसे सफाई अभियान, जागरूकता–सह–

वि.प.दि.के अवसर पर निदेशक, व.अ.स. द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं छात्रों का भ्रमण

व.व.अ.सं. जोरहाट में वि.प.दि. समारोह

हि.व.अ.सं., शिमला में अ.जै.दि. समारोह

प्रशिक्षण कार्यक्रम, त्वरित भाषण, त्वरित नारे लिखना तथा विद्यार्थियों के लिए क्विज प्रतियोगिता। इस अवसर पर पर्यावरण सुरक्षा के लिए वन आधारित आजीविका के प्रसार पर किसानों की बैठक और परामर्शी कार्यशाला आयोजित की गई।

रेगिस्तानीकरण को रोकने के लिए विश्व दिवस

- शु.व.अ.सं., जोधपुर तथा हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा 17 जून 2015 को रेगिस्तानीकरण को रोकने के लिए विश्व दिवस मनाया गया। इस अवसर पर व्याख्यान दिये गये और विचार–विमर्श किया गया। शु.व.अ.सं. परिसर में रोपण अभियान भी आयोजित किया गया।

डॉ.वी.पी. तिवारी, निदेशक, हि.व.अ.सं., रेगिस्तानीकरण रोकने हेतु विश्व दिवस के अवसर पर श्रोताओं से वार्तालाप करते हुए

शु.व.अ.सं., जोधपुर में रेगिस्तानीकरण रोकने हेतु दिवस समारोह के दौरान रोपण गतिविधि

वन महोत्सव

- उ.व.अ.सं. के अधीनस्थ वा.अ.मा.सं.वि.के., छिन्दवाड़ा द्वारा दिनांक 7 जुलाई 2015 को केंद्र के परिसर में रोपण आयोजित करके समारोह मनाया गया और वा.अ.मा.सं.वि.के. के निवासियों को पौधे वितरित किये गये।
- व.अ.सं., देहरादून ने 17 जुलाई 2015 को वन महोत्सव मनाया।
- शु.व.अ.सं., जोधपुर ने 7 अगस्त 2015 को आर्बोरेटम में वन महोत्सव मनाया। इस अवसर पर आर्बोरेटम में विभिन्न प्रजातियों का रोपण किया गया।

शु.व.अ.सं. जोधपुर में वन महोत्सव समारोह

- व.उ.सं., रांची ने 7 अगस्त 2015 को वन महोत्सव मनाया। डॉ. एस. ए. अन्सारी, निदेशक, व.उ.सं., ने विभिन्न प्रभागों के वैज्ञानिकों तथा कर्मियों के साथ विभिन्न प्रजातियों का रोपण किया।
- हि.व.अ.सं., शिमला के अधिकारियों/कर्मचारियों ने विभिन्न प्रजातियों का रोपण करके 14 अगस्त 2015 को 66वां वन महोत्सव मनाया।

हि.व.अ.सं., शिमला में वन महोत्सव समारोह

हिमालयन दिवस

- व.अ.सं., देहरादून ने 9 सितम्बर 2015 को हिमालयन दिवस मनाया। दिवस का विषय ''सबका हिमालय'' था जिसका उद्देश्य आगन्तुकों सहित आम जनता में जागरूकता पैदा करना था। इस अवसर पर व.अ.सं. में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

हिमालयन दिवस पर व.अ.सं. में प्रदर्शनी का उद्घाटन

स्वच्छ भारत अभियान

- 2 अक्टूबर 2015 को महात्मा गांधी के 146वें जन्म दिवस के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान चलाया गया। इस दिन भा.वा.अ.शि.प. तथा इसके संस्थानों और केंद्रों में स्वच्छता अभियान चलाया गया।

व.अ.सं., देहरादून में स्वच्छ भारत अभियान

वन्यजीव संरक्षण दिवस

राज्य वन विभाग, छिन्दवाड़ा द्वारा आयोजित वन्यजीव संरक्षण सप्ताह कार्यक्रम के अन्तर्गत 2 से 4 अक्टूबर 2015 तक उ.व.अ.सं., जबलपुर के अधीनस्थ वा.अ.मा. सं.वि.के., छिन्दवाड़ा द्वारा पक्षी दर्शन अभियान तथा प्रकृति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिनमें विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

- भा.वा.अ.शि.प. के सभी संस्थानों द्वारा 27 से 31 अक्टूबर 2015 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता, नारा लेखन तथा पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई।

विश्व वानिकी दिवस

- व.अ.सं., देहरादून ने यह दिवस 21 मार्च 2016 को मनाया। संस्थान में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें पोस्टरों द्वारा संस्थान की उपलब्धियों को चित्रित किया गया।
- का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू ने यह दिवस 21 मार्च 2016 को मनाया। इस वर्ष का विषय था ''वन एवं जलवायु परिवर्तन''। इस अवसर पर रोपण कार्यक्रम के साथ 'कर्नाटक और गोवा के संदर्भ में जलवायु परिवर्तन और इसके प्रस्तावित सुधार' पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय वन शहीद दिवस

- वन तथा वन्यजीवों की रक्षा के लिए जिन वन कार्मिकों ने अपने प्राणों की आहुति दी उनकी याद में व.अ.सं. के ब्रांडिस रोड पर 11 सितम्बर 2015 को राष्ट्रीय वन शहीद दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने बताया कि अब तक देश की वन सम्पदा एवं वन्यजीवों की रक्षा के लिए करीब 1400 वन कर्मियों ने बलिदान दिया। इस अवसर पर भा.वा.अ.शि.प., व.अ.सं. तथा आई. जी.एन.एफ.ए. के कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। शहीदों की याद में दो मिनट का मौन रखा गया।

व.अ.स., देहरादून में राष्ट्रीय वन शहीद दिव मनाया गया

किसान मेला/प्रदर्शनी/व्यापारिक मेला आदि।

- का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू एवं सेंडल वुड सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से चंदनकाष्ठ उत्पादकों

का मेला 7 नवम्बर 2015 को का.वि.प्रौ.सं, बंगलुरू में आयोजित किया गया। इस मेला में लगभग 250 किसानों ने भाग लिया। मेले का उद्घाटन श्री जी. एम. सिद्धेश्वरा, माननीय मंत्री, भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम, भारत सरकार ने किया।

- व.व.अ.सं., जोरहाट ने 16 नवम्बर 2015 को 'किसान मेले' का आयोजन किया जिसमें 300 से अधिक किसानों, वृक्ष उत्पादकों, बांस शिल्पकारों, शिल्पियों,

का.बि.प्रौ.सं., बगलुरु एवं सैंडलवुड सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से चंदन काष्ठ उगाने वालों की बैठक का आयोजन

अगर व्यवसाइयों, जे.एफ.एम.सी. सदस्यों तथा सरकारी कार्मिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिसमें संस्थान की अनुसंधान उपलब्धियों के बारे में बताया गया था। इस अवसर पर श्री प्रकाश जावड़ेकर, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार तथा जोरहाट के संसद सदस्य श्री कामाख्या प्रसाद तासा और मंत्रालय के अनेक उच्च स्तरीय कार्मिकों ने भाग लिया।

- भा.वा.अ.शि.प. द्वारा 3 से 7 जनवरी 2016 को मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूरू में आयोजित इंडियन साइंस कॉंग्रेस प्रदर्शनी में भाग लिया गया। भा.वा.अ.शि.प. गतिविधियों को का.वि.प्रौ.सं, बंगलुरू द्वारा प्रदर्शित

किसान मेले के दौरान सभा को संबोधित करते हुए माननीय मंत्री जा प.व.ज.प.मं.

मैसूर विश्वविद्यालय में इंडियन साईंस कांग्रेस प्रदर्शनी में भा.वा.अ.शि.प. का स्टाल

किया गया।

- शु.व.अ.सं., जोधपुर ने जिला उद्योग केंद्र, जोधपुर तथा उद्योयोग संघ द्वारा 7 से 17 जनवरी 2016 तक जोधपुर में आयोजित पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प उत्सव 2016 में अपना स्टॉल लगाकर सहभाग किया।
- शु.व.अ.सं., जोधपुर ने आरोग्यम –2016 मेले में भाग लिया जिसका आयोजन आयुर्वेद विभाग, जोधपुर द्वारा जोधपुर में 28 से 31 जनवरी 2016 तक किया गया।
- व.व.अ.सं., जोरहाट ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन भा.वा.अ.शि.प. का प्रतिनिधित्व करते हुए 'डेस्टीनेशन नॉर्थ ईस्ट 2016' में सहभाग किया जिसका आयोजन उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 12 से 14 फरवरी 2016 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में किया गया।
- व.व.अ.सं., जोरहाट अधीनस्थ वन आजीविका तथा विस्तार केन्द, अगरतला ने 26 मार्च 2016 को जीविकोपार्जन वानिकी मेले का आयोजन किया।

"डेस्टीनेशन नॉर्थ ईस्ट, 2016" में प्रगति मैदान, नई दिल्ली में व.व.अ.सं. प्रदर्शनी स्टाल

रेडियो वार्तायें

❖ व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर के प्रतिनिधियों की निम्न 4 वार्ताएं आकाशवाणी, कोयम्बटूर द्वारा प्रसारित की गईं :

- बीज उत्पादन एवं बीज हैंडलिंग प्रक्रिया (तमिल में) 28 अगस्त 2015 को।
- वृक्ष फसलों में रोगों के प्रबंधन के लिए जैव नियंत्रण पद्धतियां और जैव उर्वरक (तमिल में) 22 सितम्बर 2015 को।
- पवन अवरोधक वृक्ष 2 नवम्बर 2015 को।
- सागौन की खेती कार्यप्रणाली (तमिल में) 9 नवम्बर 2015 को।

❖ हि.व.अ.सं., शिमला के प्रतिनिधियों ने एक वार्ता की जिसका सजीव प्रसारण दूरदर्शन केंद्र, शिमला द्वारा हुआ और दो वार्ताएं आकाशवाणी (एफ.एम.) भद्रवाह, जनपद डोडा से हुआ जिनका विवरण निम्न है :

- उत्तर–पश्चिम हिमालय के औषधीय पादपों पर 30 अक्टूबर 2015 को।
- चिनाव घाटी, जम्मू एवं कश्मीर में औषधीय पादपों के लिए अवसर और समशीतोष्ण बगीचों के मध्य लगाने के लिए औषधीय पादपों पर 4 फरवरी 2016 को।

❖ व.व.अ.सं., जोरहाट के प्रतिनिधियों ने दिसम्बर 2015 में संवादात्मक कार्यक्रम में किसानों के साथ 'वर्मी कम्पोस्टिंग ''छोट पैमाने के बांस उद्योगों'' (अगर के लिए सींक बनाना और अन्य हस्तशिल्पों) तथा प्रदर्शन ग्राम में 'नागा मिर्च (किंग चिली) की फसल' पर रेडियो वार्ता की।

❖ व.अ.सं., देहरादून के प्रतिनिधियों की एक वार्ता आकाशवाणी, दिल्ली (मीडियम वेव एवं एफ.एम. – रैनबो) से और दो वार्ताएं दूरदर्शन किसान से प्रसारित हुईं जो कि निम्न हैं :

- वन विज्ञान केंद्रों द्वारा प्रौद्योगिकियों का प्रसार और अन्य विस्तार गतिविधियों पर 16 फरवरी 2016 को।
- *लैंटाना कमारा* के विशेष संदर्भ में वन अपतृणों का उपयोजन और मूल्यवर्द्धन तथा लैंमन ग्रास (*सिम्मबोपोगॉन फ्लेसियोसस*) के विशेष संदर्भ में औषधीय पादपों का उपयोजन और कृषि पर 22 जनवरी 2016 को।

❖ उ.व.अ.सं., जबलपुर के प्रतिनिधियों ने दो वार्तायें कीं जिन्हें आकाशवाणी (भोपाल, इन्दौर, जबलपुर) से 18 से 23 मार्च 2016 तक प्रसारित किया गया। वार्तायें निम्नलिखित विषयों पर की गई :

- जैव प्रौद्योगिकी के जरिये स्पाईडर सिल्क का उपयोग।
- ऑर्गेनिक खेती में नाशीकीटों के जैव नियंत्रण एजेन्ट के रूप में मकड़ियों की भूमिका।

7.4 परामर्शी सेवायें

भा.वा.अ.शि.प. ने निम्नलिखित परियोजनाओं पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की :

- ड्राफ्ट फाईनल रिपोर्ट :
  - ❍ उत्तराखंड की यमुना तथा टॉन्स और उनकी सहायक नदियों पर जल विद्युत परियोजनाओं का संचयी समाघात।
  - ❍ हिमाचल प्रदेश में सतलज नदी घाटी में जल विद्युत परियोजनाओं पर संचयी पर्यावरणीय समाघात आकलन अध्ययन।
  - ❍ तोश पार्वती (नाकथान) 460 मैगा वॉट जल विद्युत परियोजना, हिमाचल प्रदेश के लिए पर्यावरणीय समाघात आकलन तथा पर्यावरणीय प्रबंधन योजना।
  - ❍ पश्चिमी सिंहभूम जिला झारखंड में सारंदा क्षेत्र की वहन क्षमता अध्ययन पर अन्तिम रिपोर्ट।
  - ❍ बेलारी, चित्रदुर्ग तथा तुमकुर की सी श्रेणी की 15 खदानों की अस्थाई पुनरूद्धार तथा पुनर्स्थापन योजना (आर व आर योजना) पर माननीय उच्चतम न्यायलय की केन्द्रीय समिति (सी.ई.सी.) के दिशा निर्देशानुसार अन्तिम रिपोर्ट तैयार की गई।

व.अ.सं., देहरादून

- भारत कुकिंग कोल लिमिटेड, धनवाद के कोयला खान क्षेत्रों के पारितंत्रीय पुनर्स्थापन पर परामर्शी सेवायें प्रदान की।
- सरकारी संगठनों तथा निजी उद्योगों से प्राप्त कागज के नमूनों का बी. आई. एस. विशिष्टताओं के अनुरूप भौतिक तथा आप्टीकल गुणों का परीक्षण किया।
- उत्तराखंड राज्य वन विभाग को राज्य में साल के अन्तःकाष्ठ छेदक *होप्लोसिरामबिक्स स्पाइनीकार्निस* के ट्रैप ट्री आपरेशन के बारे में दिशा निर्देश दिये।
- मैक्सीको को निर्यात किये जाने वाले *मोरिंगा ओलीफेरा* बीजों को पादप स्वास्थ्य प्रमाण पत्र दिया गया।

- उपनिदेशक (पी. पी), पादप रक्षण सलाहकार, भारत सरकार पादप रक्षण निदेशालय, संगरोध एवं भण्डारण, एन. एच. IV फरीदाबाद – 211001 हरियाणा को भारत के अर्जेन्टिना से *इपीसायरफस बैलटिट्स* तथा रानी मधुमक्खी के आयात हेतु तकनीक सलाह दी।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

- **हितधारकों को कैज्यूरिना कृन्तकों का लाईसेन्स देना**

कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश के प्रगतिशील किसान को तथा इंटरनेशनल पेपर्स – ए.पी.पी.एम. लिमिटेड, राजामुन्दरी को कैज्यूरिना कृन्तकों के लिए लाइसेन्स : संस्थान द्वारा अपने गहनता पूर्वक प्रबंधित बीज उद्यान से उच्च–उपज बीजों को वृक्ष उत्पादकों जैसे किसानों, उद्योगों और वन विभागों को उपलब्ध कराया जाता है। ए पी पी एम, लिमिटेड ने अपने कृषि वानिकी कार्यक्रम में तेजी से उगने वाले नये कृन्तकों को लगाने के लिए व.आ.वृ.प्र.सं. के साथ संस्थान द्वारा विकसित कैज्यूरिना के पांच कृन्तकों (सी जे 7, सी जे 9, सी जे 10, सी एच 1 तथा सी एच 2) वाणिज्यिक स्तर पर प्रवर्धन और किसानों को आपूर्ति करने के लिए लाईसेन्स अनुबंध किया है। कम्पनी ने इन कृन्तकों को प्रसारित करने के लिए 10 वर्ष की अवधि हेतु एक मुश्त लाईसेन्स फीस दी है।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

- क्षेत्र की पारिस्थितिकीय अभिन्नता के लिए पी डी पी आई आई आई टी डी एम परिसर में वृक्षावली रोपण जिसे आई आई आई टी डी एम, जबलपुर द्वारा निधिकृत किया गया है।
- वर्ष में चार विभिन्न खानों तथा दो रेलवे परियोजनाओं के लिए दो वन्यजीव संरक्षण परियोजनायें तैयार की गईं।

7.5 राजभाषा संबंधी क्रिया-कलाप

- भा.वा.अ.शि.प. ने 7 से 14 सितम्बर 2015 तक हिन्दी सप्ताह मनाया। इस सप्ताह के दौरान पांच प्रतियोगितायें आयोजित की गई। समापन समारोह 14 सितम्बर 2015 को हुआ जिसमें 100 से अधिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया।
- भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 15 अक्टूबर 2015 को हिंदी प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की जिसमें 30 से अधिक कर्मचारियों ने भाग लिया।
- भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने हिंदी पत्रिका 'तरूचिंतन' प्रकाशित की।
- व.व.अ.सं., जोरहाट ने निम्नलिखित क्रिया कलाप आयोजित किये :
  - 23 जून 2015, 14 दिसम्बर 2015 तथा 28 मार्च 2016 को हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन।
  - 8 से 15 सितम्बर 2015 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन।
  - षठमासिक हिंदी और असमी ई –पत्रिका "वर्षारण्यम" अवमुक्त की।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा निम्नलिखित गतिविधियां की गईं :
  - 26 मई 2015 को 'केंद्रीय सरकारी कार्यालय में हिन्दी का महत्व और आई टी उपकरणों पर हिन्दी में काम करना' और 15 दिसम्बर 2015 को 'द्विभाषी में टिप्पण एवं प्रारूपण' पर हिन्दी कार्यशालाएं।
- **का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू** ने निम्नलिखित राजभाषा क्रिया कलाप आयोजित किये :

भा.वा.अ.शि. में हिन्दी सप्ताह समागन समारोह के दौरान दीप प्रज्ज्वलित करते महानिदेशक, भा.पा.अ.शि.प्र.

"वर्षारण्यम" हिन्दी एवं असमी की छमाही ई–पत्रिका

- 14 से 28 सितम्बर 2015 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया।
- संस्थान ने अधिकारियों के लिए 29 सितम्बर 2015 को राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने निम्नलिखित क्रियाकलाप आयोजित किये :

- नवनियुक्त लिपिकों के लिए सारांश साफ्टवेयर पर प्रशिक्षण।
- 14 से 28 सितम्बर 2015 तक हिन्दी पखवाड़ा।

व.उ.सं., रांची ने निम्नलिखित क्रियाकलाप आयोजित किये :

- 1 से 15 सितम्बर 2015 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया।
- 'हिंदी में वैज्ञानिक लेखन' पर कार्यशाला।

उ.व.अ.सं., जबलपुर तथा हि.व.अ.सं., शिमला ने सितम्बर 2015 में हिन्दी दिवस तथा हिंदी पखवाड़ा मनाया।

7.6 पुरस्कार तथा सम्मान

- डॉ. विश्वजीत कुमार तथा आलोक यादव को 2 दिसम्बर 2015 को सम्मानजनक ब्रैन्डिस पुरस्कार दिया गया। उन्हें यह पुरस्कार, वानिकी के क्षेत्र में वर्ष 2013 के लिए *इन्डियन फारेस्टर* के दिसम्बर 2013 अंक में छपे शोधलेख *'गोडुआ अंगुस्टीफोलिया* कुंठ – एक वाणिज्यिक बांस' में गूटी बांधने (एयर लेयरिंग) द्वारा वानस्पतिक प्रवर्धन' हेतु प्रदान किया गया।
- डॉ. हुकम सिंह, अनुसंधान अधिकारी, व.अ.सं., देहरादून को वर्ष 2015 के लिए वीनस अन्तर्राष्ट्रीय संघ, चेन्नई तमिलनाडु, भारत की ओर से युवा वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया। उन्हें उत्तराखंड विज्ञान एवं तकनीकी परिषद्, देहरादून से भी वानिकी एवं पर्यावरण विज्ञान पर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- ''जैव सक्रिय रासायनिक संघटन की प्रोफाइलिंग हेतु *फाईकस ऑरीक्यूलाटा* के फल के चर्बीदार तेल के जी.सी.–एम.एस. विश्लेषण' पर निशात अन्जुम तथा वाई सी त्रिपाठी, व.अ.सं., देहरादून को 'पादप रसायन तथा आयुर्वेद : क्षमता एवं संभावनायें' पर 14वें सिम्पोजियम जो 19 दिसम्बर 2015 को तसमानिया अकादमी, देहरादून (उत्तराखंड) द्वारा आयोजित हुआ में सर्वोत्तम पोस्टर प्रस्तुति हेतु प्रथम पुरस्कार दिया गया।
- 'रक्षात्मक, कार्यसक्षम तथा मूल्यवान वस्त्र उत्पाद हेतु, *मीलिया डुबिया* के कीटाणुरोधी प्राकृतिक रंजक' पर पोस्टर प्रस्तुति हेतु अनीता पाल, राकेश कुमार तथा वाई. सी. त्रिपाठी, व.अ.सं., देहरादून को 'पादप रसायन तथा आयुर्वेद : क्षमता एवं संभावनायें' पर 14वें सिम्पोजियम जो 19 दिसम्बर 2015 को तसमानिया अकादमी, देहरादून (उत्तराखंड) द्वारा आयोजित हुआ में सर्वोत्तम पोस्टर प्रस्तुति हेतु तृतीय पुरस्कार दिया गया।
- ''पादप रसायन पद्धति – *पाईनस राक्सबर्घाई* की सुइयों का सक्षम उपयोग'' पर प्रलेख प्रस्तुत करने हेतु पल्लवी दूबे, प्रदीप शर्मा तथा विनीत कुमार, व.अ.सं., देहरादून को 10वें उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं तकनीकी कांग्रेस में जो विज्ञानधाम, देहरादून में 10–12 फरवरी 2016 को आयोजित हुई ''युवा वैज्ञानिक पुरस्कार'' दिया गया।
- श्री अरविंद कुमार, वैज्ञानिक 'डी', व.अ.सं., देहरादून को ग्रामीण अर्थव्यवस्था उत्थान सोसाईटी, वाराणसी द्वारा वर्ष 2015 के लिए 'वर्ष के वैज्ञानिक' पुरस्कार दिया गया।
- डॉ. मनीषा थपलियाल, वैज्ञानिक 'ई', व.अ.सं., देहरादून को आई यू.एफ.आर.ओ.–एस.डी.पी.सी. (विकास क्षमताओं हेतु विशेष कार्यक्रम) के अंतर्गत आई यू.एफ.आर.ओ. (वियाना) द्वारा वन अनुसंधान संस्थान, मलेशिया द्वारा सेलंगोर, मलेशिया में (17 से 19 नवम्बर 2015 तक) प्रशिक्षण कार्यशाला ''वन विज्ञान की क्रमबद्ध समीक्षा'' में भाग लेने के लिए फेलोशिप प्रदान किया गया।
- डॉ. मथीस नाम्बियार वीतिल, वैज्ञानिक 'ई', व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर को ऑस्नाब्रूप विश्वविद्यालय, जर्मनी में अध्ययन करने के लिए डी.ए.ए.डी. फेलोशिप प्रदान की गई।
- डॉ. मथीस नाम्बियार वीतिल, वैज्ञानिक 'ई', व.आ.वृ.प्र.सं कोयम्बटूर को 2016–17 में फुलब्राईट – नहेरू अकादमी और यू.एस.आई.ई.एफ. के प्रोफेशनल एक्सिलेंस फेलोशिप कार्यक्रम के अंतर्गत विस्कॉन्सिम, मैडीसन, यू.एस.ए. में अध्ययन करने हेतु चयनित किया गया।
- डॉ. ए. शान्ति, वैज्ञानिक 'सी', व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर को *''स्वीटीनिया मैक्रोफाइला* तथा *स्वीटीनिया महोगनी* के प्रजाति भेद हेतु आइसोजाईम मार्कर्स की पहचान हेतु'' प्रलेख प्रस्तुत करने पर 10–11 मार्च 2016 को त्रिचिरापल्ली में

भारतीदासन विश्वविद्यालय में सर्वोत्तम प्रलेख प्रस्तुतिकरण के लिए द्वितीय पुरस्कार दिया गया।

- सातवें डी एन ए एवं स्टार्स उद्योग वर्ग ने का.वि.प्रौ. सं. को शिक्षा लीडरशिप पुरस्कार प्रदान किया। संस्थान को यह अवार्ड लीडरशिप, विकास, नवीनीकरण तथा उद्योग पर किये गये कार्य हेतु दिया गया।
- माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा मैसूर में आयोजित भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 103वें वार्षिक सत्र के दौरान डॉ. तरूण कांत, वैज्ञानिक–एफ, शु.व.अ.सं., जोधपुर को 'बी.पी. पाल मेमोरियल गोल्ड मैडल'' प्रदान किया गया।
- डॉ. विपिन प्रकाश, वैज्ञानिक 'डी', व.व.अ.सं. जोरहाट को समाज के प्रति उनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष योगदान, हेतु खासकर फार्मिंग/कृषि/वानिकी अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण एवं पारिपद्धति संस्थान, कलकत्ता तथा भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2015 के युवा वैज्ञानिक पुरस्कार हेतु चयनित किया गया है।

प्रतिष्ठित आगंतुक

- सुश्री उमा भारती, माननीय मंत्री जल संसाधन, नदी विकास व गंगा पुनर्जीवन, श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, श्री श्रीपद येशो नायक, माननीय मंत्री आयुष, श्री सर्वानन्द सोनोवाल, माननीय मंत्री युवा मामले एवं खेलकूद, श्री हरीश रावत, माननीय मुख्य मंत्री, उत्तराखंड तथा श्री दिनेश अग्रवाल, माननीय वन मंत्री, उत्तराखंड ने 2 जुलाई 2015 को व.अ.सं. का दौरा किया।
- श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय मंत्री पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन ने 19 अक्टूबर 2015 को का. वि.प्रौ.सं., बंगलुरू का दौरा किया और अनुसंधान क्रियाकलापों की समीक्षा की।

सुश्री उमा भारती, माननीय मंत्री, जल संसाधन नदी विकास व गंगा पुनर्जीवन का व.अ.सं., देहरादून भ्रमण

- श्री कामाख्या प्रसाद तासा, माननीय संसद सदस्य, जोरहाट, असम ने 13 नवम्बर 2015 को व.व.अ.सं, जोरहाट का दौरा किया और बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण के समापन सत्र में भाग लिया।
- श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार ने 16 नवम्बर 2015 को व.व.अ.सं., जोरहाट का दौरा किया और संस्थान द्वारा आयोजित ''किसान मेला'' में भाग लिया।
- श्री बाली भगत, माननीय वन मंत्री, जम्मू एवं कश्मीर के. सरकार तथा श्री ए. के. सिंह, पी.सी.सी.एफ., जम्मू एवं कश्मीर सरकार ने 22 दिसम्बर 2015 को का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू का दौरा किया।
- श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय राज्य मंत्री तथा डॉ. अनिल कुमार, भा. व. से., अतिरिक्त महानिदेशक पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के साथ 9 जनवरी 2016 को बा.बे.उ.सं., बेथलेम, बेंगथलांग, आईजॉल, मिजोरम का दौरा किया।

श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र) प.व.ज.प.मं. का दौरा

माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प.व.ज.प.मं. द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन